43 8 Pages 4-7.Ledors

एम.एच.डी

एम.ए. हिंदी

एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्य
2012-13

एम.एच.डी.-2 : आधुनिक हिंदी काव्य
एम.एच.डी.-3 : उपन्यास एवं कहानी
एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ
एम.एच.डी.-6 : हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

43

सत्रीय कार्य-2012-13

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें एम.एच.डी.-02, 03, 04 और 06 पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं। ये 8-8 क्रेडिट के पाठ्यक्रम हैं और आपको हर पाठ्यक्रम में एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य 100 अंकों का है। प्रत्येक सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे गए हैं।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए "विवेचना" नाम से आलोचनात्मक लेखों के संग्रह भेजे गए हैं। पाठ्यक्रम 2, 3 तथा 4 में "विविधा" नाम से मूल साहित्यिक कृतियों का संकलन किया गया है। पाठ्यक्रमों में शामिल नाटक और उपन्यासों को प्राप्त करने की व्यवस्था आपको स्वयं करनी होगी। आपसे अपेक्षा की जाती है कि सत्रीय कार्य करने से पहले इन सभी कृतियों को पढ़ लें।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा में पूछे जाने वाले सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि, रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक : .....
नाम : .....
पता : .....
.....
.....
दिनांक : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....
सत्रीय कार्य कोड : .....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड : .....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
6. अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य की उत्तर पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संचालक के पास **जुलाई 2012 सत्र के लिए 31 मार्च 2013 एवं जनवरी 2013 सत्र के लिए 30 सितंबर 2013** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें :

1. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें।
2. व्याख्या से संबंधित काव्यांशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा, शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
3. आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।
4. वाक्यों और अनुच्छेदों के बीच क्रमबद्धता हो।
5. आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
6. उत्तर साफ और सुंदर अक्षरों में लिखें तथा जिन बातों पर बल देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दें।
7. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

43

एम.एच.डी-2 : आधुनिक हिंदी-काव्य

सत्रीय कार्य

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी-2/टीएमए/2012-13
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 300 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **12×3=36**

क)

विफल जीवन व्यर्थ बहा, बहा,
सरस दो पद भी न हुए हहा!
कठिन है कविते, तुम भूमि ही,
पर यहाँ श्रम भी सुख–सा रहा।
करुणे, क्यों रोती है? 'उत्तर' में और अधिक तू रोई –
'मेरी विभूति है जो, उसको 'भव–भूति' क्यों कहे कोई !'

ख)

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि !
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ हे बाल विहंगिनी !
पाया तूने यह गाना ?

सोई थी तू स्वप्न – नीड़ में
पंखों के सुख में छिपकर,
ऊँघ रहे थे, घूम द्वार पर
प्रहरी से जुगनू नाना;

शशि–किरणों से उतर–उतरकर,
भू पर कामरूप नभचर
चूम नवल कलियों को मृदु मुख
सिखा रहे थे मुसकाना;

स्नेह हीन तारों के दीपक,
स्वास – शून्य थे तरु के पात,
विचर रहे थे स्वप्न अवनि में,
तम ने था मंडप ताना।

ग)

एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है।
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ –
'यह तीसरा आदमी कौन है ?'
मेरे देश की संसद मौन है।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए : **16×4=64**

(क) 'राम की शक्ति पूजा' का विश्लेषण कीजिए।

(ख) दिनकर के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक सरोकारों का विवेचन कीजिए।

(ग) नागार्जुन की कविताओं के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर कीजिए।

(घ) अज्ञेय की काव्य भाषा और काव्य शिल्प की विशेषताएँ बताइए।

43

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम
उपन्यास एवं कहानी (एम.एच.डी-3)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड/एमएचडी:3
सत्रीय कार्य कोडःएमएचडी-3/टीएम/ए/2012-13
कुल अंकः100

1. 'होरी' जैसे छोटी जोत के किसान का महाजनी परंपरा से मुक्ति संघर्ष को 'गोदान' के माध्यम से रेखांकित कीजिए। 10

2. अल्पसंख्यक वर्ग में व्याप्त भय, असुरक्षा तथा आर्थिक दबाव की सच्चाई की सूखा बरगद के माध्यम से समीक्षा कीजिए। 10

3. दलित स्त्री के तिहरे शोषण की 'यह अंत नहीं' कहानी के आधार पर विवेचना कीजिए। 10

4. 'काली' के गांव से शहर की ओर पलायन के सामाजिक व आर्थिक कारणों की सविस्तार चर्चा कीजिए। 10

5. विस्थापन और शरणार्थी बनने की पीड़ादायक त्रासदी की 'सिक्का बदल गया' कहानी के आधार पर समीक्षा कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए। 10×5=50

   (क) त्रिशंकु में अभिव्यक्त वैचारिक संघर्ष

   (ख) चीफ की दावत में चित्रित मध्यमवर्गीय अवसरवाद

   (ग) मैला आँचल में चित्रित यथार्थ

   (घ) जाति विषमता की सच्चाई और ठाकूर का कुआँ

   (ङ) बाणभट्ट की आत्मकथा का सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम
नाटक और अन्य गद्य विधाएँ (एम एच डी-4)

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने नाटकों और अन्य गद्य विधाओं का अध्ययन किया है। चार नाटक और चौदह गद्य रचनाओं पर कुल 26 इकाइयाँ हैं। इनके अतिरिक्त आपको 'हिंदी गद्य विवेचना' के अंतर्गत कई आलोचनात्मक लेख भी दिए गए हैं। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. हिंदी के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्नपत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ गद्यांशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न रचना की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, चरित्र-चित्रण, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं। नाटक से संबंधित सवालों में रंगमंच प्रस्तुति और अभिनेयता के बारे में भी सवाल होंगे।

- आपसे विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों क्षेत्रों से हो सकती हैं।

- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-4
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–4/टीएमए/2012–13
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4=40

क) लोहा बड़ा कठोर होता है। कभी-कभी वह लोहे को भी काट डालता है। उहूं, भाई! मैं तो मिट्टी हूं– मिट्टी जिसमें से सब निकलते हैं। मेरी समझ में तो मेरे शरीर की धातु मिट्टी है, जो किसी के लाभ की सामग्री नहीं, और वास्तव में उसी के लिए सब धातु अस्त्र बनकर चलते हैं, लड़ते हैं, जलते हैं, टूटते हैं, फिर मिट्टी हो जाते हैं। इसलिए मुझे मिट्टी समझो-धूल समझो।

ख) पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी

शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बौनी हो जायेगी
जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है मनुष्य ने
सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में
सदा-सदा के लिये होगा विलीन वह
गेहूँ की बालो में सर्प फुफकारेंगे
नदियों में बह-बह कर आयेगी पिघली आग।

ग) ये जो ठिगने-से लेकिन शानदार दरख्त गर्मी की भयंकर मार खा-खाकर और भूख-प्यास की निरंतर चोट सह-सहकर भी जी रहे हैं, इन्हें क्या कहूँ? सिर्फ जी ही नहीं रहे हैं, हँस भी रहे हैं। बेहया हैं क्या? या मस्तमौला हैं? कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़ें काफी गहरी पैठी रहती हैं। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भाग्य खींच लाते हैं।

घ) उसका यह प्रश्न उसका अपना नहीं था। उसने अनजाने नहीं, जानबूझकर ही उंगली उठाई थी उधर, जिधर मनुष्य को नंगा रखकर मनुष्य ने अपने मुनाफों के लिए बेशुमार कपड़ा तालों में बंद कर रखा था, जहाँ वस्तु मनुष्य के लिए न होकर पैसे के लिए थी। कितना बड़ा व्यंग्य और विद्रूप था यह कि आज कपड़ा बनाने वाले स्वयं नंगे थे!

2. 'अंधेर नगरी' नाटक में अभिव्यक्त राजनीतिक-सामाजिक दृष्टिकोण का विवेचन कीजिए। 10

3. 'स्कन्दगुप्त' अथवा 'अंधायुग' की कथावस्तु के आधार पर उनकी प्रासंगिकता और महत्त्व पर प्रकाश डालिए। 10

4 एब्सर्ड नाटक की विशेषताओं के आधार पर 'तांबे के कीड़े' की समीक्षा प्रस्तुत कीजिए। 10

5 पठित रचनाओं के आधार पर रेखाचित्र और संस्मरण विधाओं की तुलना कीजिए। 10

6 निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X4=20

(क) 'आधे-अधूरे' की नायिका
(ख) 'औरत' और नुक्कड़ नाटक
(ग) राहुल का यात्रा-संस्मरण
(घ) 'ठकुरी बाबा' की भाषा

एम.ए. हिन्दी कार्यक्रम
हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास (एम.एच.डी-6)

एम.ए. हिन्दी का यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। "हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास" में आपने आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों, हिन्दी गद्य साहित्य एवं भाषा के विकास का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन किया है।

सत्रीय कार्य का एक और उद्देश्य है -सत्रांत परीक्षा के लिए आपको तैयार करना। सत्रांत परीक्षा में जो सवाल आपसे पूछे जाएँगे उनका ढाँचा सत्रीय कार्य में पूछे गए सवालों जैसा ही होगा। इसीलिए सत्रीय कार्य को आप गंभीरता से लें। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा में पूछे गए सवाल दो प्रकार के होंगे।

1. कुछ प्रश्न निबंधात्मक या विवेचनात्मक होंगे जो पाठ्यक्रम में शामिल हिन्दी काव्य प्रवृत्तियों, गद्य साहित्य तथा हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकास से संबंधित हो सकते हैं।

2. दूसरे प्रकार के प्रश्नों में आपको विभिन्न विषयों पर विवरणात्मक/आलोचनात्मक टिप्पणियाँ लिखनी होंगी। निबंधात्मक प्रश्नों के लिए लगभग 60 प्रतिशत तथा टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए 40 प्रतिशत अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रांत परीक्षा में निबंधात्मक प्रश्न 60 से 80 प्रतिशत के हो सकते हैं।

सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 8 पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोडः एम एच डी-6/टी एम ए/2012-2013
कुल अंक 100

(1) अपभ्रंश के स्वरूप और विकास की चर्चा करते हुए अपभ्रंश और हिन्दी के बीच अन्तर के प्रामाणिक आधारों का परिचय दीजिए। 12

(2) तत्कालीन सामाजिक, ऐतिहासिक संदर्भ में भक्ति आंदोलन की व्याख्या कीजिए। 12

(3) आधुनिक काल के विभिन्न समाज सुधार आंदोलनों पर प्रकाश डालिए। 12

(4) हिन्दी उपन्यास के विकास पर निबंध लिखिए। 12

(5) आधुनिक आर्य भाषाओं के विकास पर विचार कीजिए। 12

(6) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिएः 8× 5=40

(क) वैदिक साहित्य
(ख) भारतेन्दु युगीन नाटक
(ग) कबीर
(घ) प्रगतिवादी साहित्य चिंतन
(ङ) अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी

43